मिनख नै समझावणौ दोरौ है

नारायणसिंह भाटी

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

प्रकाशक : पंचशील प्रकाशन
फिल्म कॉलोनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003

संस्करण : प्रथम, 1984

मूल्य : पच्चीस रुपये

मुद्रक : शीतल प्रिण्टर्स,
फिल्म कॉलोनी, जयपुर-302003

MINAKH NE SAMJHAWANO DORO HAI
by : Narayan Singh Bhati *Price* : Rs. 25.00

मां चंद्रकुंवर
री
ममता-मूरत
नै

अनुक्रम

जीवता अैनांण

केई कांमरू[1] कोचरियां तौ उडगी
पण कोचर हाल रैगी है
इण नुवादियोड़ी माणसी रै
डरू' फरू' हिये हेट,

अै खपणी खोगांळां खाली रियां ही
नवी कुचमाद री कोख रा वचिया
फेरू' वां में पांगरै
लारलौ इतियास
इणी जापां रो जोखौ है,
इण खातर इणने भरण री
जाभौ जतन करतां
म्हारी घणी रूपाळी रातां रा
अजपा ओजका
सपनीजती पलकां तळै आफळै

नवी पीढी री पांणी
पतियांणसी कोई दिन
इण रा अै आखरां में उथलीजता
जीवता अैनांण ।[2]

---

1. कामरूदेश 2. निशान ।

और ही रळियावणी है

कदे
पावसियें उर री सेजी
वारलै झालां सूं वारै आय
छिल छिल छोळां चढ़ जावती
हमे
मांयली परतां में
थिर होय
गैरी गाढीजग्यौ है
इण में ऊगोड़ै
विरछां री रळी[1]
और ही रळियावणी है।

1. सुन्दरता, रचोन्मेश।

लेणौ देणौ

धरती ने अेक दांणो देवौ
तौ वा सैकड़ूं कणूका पाछा देवै
सत राखणिया समाज सूं लेवै उतरौ ही
नीठो नीठ पाछौ देवै
धरती री धणियाप मोटी
कोई री आ औकात कठै ?

पण म्हारौ लेणौ इणी समाज सूं
नै देणो सैकड़ां जुगां सारू है
इणी खातर
आज रै समाज रा आंकिया टणकेल[1]
म्हनै अेक रोझड़ै[2] जिता ही लखावै—
ज्यां रो भागणौ नै भिड़कणौ
वहकणी नै वुहारणौ
खावणो नै खिडावणौ
आपरै अंग तांई पूगै
म्हां खातर अै जतना रा खेत
अेक सावत सिस्टी है
जिण में हूं आज नै वावूं[3] तौ वो
पीढ़ियां लग पांगरै ।

---

1. बडप्पन की छाप वाले, 2. गाय की शक्ल का एक जानवार जो खेतों मे नुकसान करता है । 3. बोताहूं ।

मिनख नै समझावणौ दोरौ है

करसणियै वाप री
कन्यावळ[1] सी भूख
वाखोटिया[2] बिछड़ियां
हिरणी री हूक
जिसी ही
पवीतर है
इण धरती री कूख ।

जुग जंतर[3] रा ग्रांतरां में
ग्रा ही ग्रपणास छोड जाऊँ
तौ मुग्रां ही मुकांतर[4] पाऊं,

जोयेड़ी जोत रौ कांई जोणौ है
होवते काम रौ कांई होणौ है
ग्रणु नै उधेड़णौ सोरौ है
पण मिनख नै समझावणौ दोरौ है ।

हे मन रा करणहार
ग्रौ ही करण नै
च्यार दिन फेरूं मांगू ।

---

1. कन्या के विवाह के दिन परिजनों द्वारा किया जाने वाला उपवास ।
2. हरिण का बच्चा । 3. यांत्रिक । 4. मुक्ति ।

प्रवीण परकत

ग्रा चिर जोबन चिरताळी
प्रवीण परकत सुन्दरी
सौर मंडळ सासां सूं
धरती री कण कण सरसावती
गोधूळी गादी माथै
खावगा खितिज रै
गैणांगण गोखड़ै
सांझ सवार
वारी वारी
श्रे कूकी थण[1] उघाड़ै,
धवड़ावै[2] सारी सिष्टी री
जियां जूण नै
हालरियां उगेरै बादळ वरणा गीत
चुटकियां छिटकावै पल री पांखड़ी

चूंघणो सोरो है
चाव चढ़ाव
जरणो दोरो है

---

1. स्तन 2. स्तनपान कराना।

पारौ पिंड ब्रमांड रौ
केई अरक थण री अगन सीर
धाय मरै
तौ केई सोम थण रै इमरत सूं
अघाय मरै
केई फेरां[1] रै फरेब में
फेटीज मरै
तौ केई वंटवाड़ै री राड़ में
कूटीज मरै ।

जिको मावड़ मौंट री मुकळाई मुजब
अेकूको थण चूंघ
खुली खोळ खेलै
मां रौ मोद मुळक में तोलै
वोही खिलखिलतौ खांदोळ्यै[2] चढ़ जावै
तारां री तासळी में इमरत पी जावै ।

1. विवाह के भावरे   2. कंधो पर ।

रींछ रै राज में ही मड़ारी रौ वास है

रींछ री खाल ओढ्यां
ओ सभै
सदियां सदियां रा सिराणा सूंघतौ
चाल्यौ ही जावै है
पण कोई नैं ठा नीं
किण दिस नैं क्यूं ?

बखत री खाल में केई खपग्या
केई भूसागड़जीं[1]
दरसणिया दांव लगाय लगाय
आपै में उगटग्या
पण इण री गत परखता परखता
खुद ही विगतीजग्या,

ओ कितरा ही करमां रा
कीड़ीनगरा
थूंड री अेक रूंवडी सूं थूंडाय
अदीठ पेट दाखल करतौ
आगै रौ आगै निकळ जावै ।
कितरा ओढाई[2] रा रूंखां माथै
ऊंचौ चढ़
इन्सानी ऊरवां रा

---

1. अपने आपको बहुत समझने वाले 2. विकटता ।

मदजाळा चूस
कोरी उसांसां री छूछो अंबर
छोड जावै
फेरूं नुंवै असाढ़ खातर ऊमस सिरजावै।

सगळी चीजां
ठावो ठा दीसै जदलग ही दीसै
पण इणरी रमत-रींझो[1] री
अेक रपट में
परलै रा पांख
पसरता दीसै,

तो ही घर रै घोरी[2] में
धीजै री सांस है
रींझ रै राज में ही
मदारी री वास है।

1. मस्ती भरी किलोल 2. बैल।

पैळाद पतंग

आस निरास
सांस उसांस
बरसो बरस
उठै
वासना ज्वाळ

अंत आखती
अजक वासना
हुवै होळका
करै
छळ छंद

जीव पैळाद
खोळै विलमाय
होमीजै हठ
धुकै
अंग अनंग

ज्वाळ झाळ
धोम लीला
झड़े पीळा
पण
पैळाद पतंग
पळास प्रसून
उठ बैठे
नवळ बरस री बांह-डाळ ।

उछांछळाई

औ जुगां जूनौ मिनख
पीढ़ियां सूं खपतौ पचतौ
हांफळतौ आफळतौ
नीठो नीठ[1] पगां ऊभो हुयो
आपरी न परकत री
की नींव सींव जोखियां[2]
घर धीजै री धणियाप पाळी,
हाल बाकी ही
साबत चेतै सूं
छांगियां पांगरणी भाग री टाळी
मिनख सूं मिनख री हेत पाळी,

इतरै में
सूझी उणनै उछांछळाई[3]—
धरती माथै हालतां हालतां
आपै वारै आयो
तौ चांद री चांदो नेड़ो ही लखायो
झट, अेक पग उण माथै मेल दियो
आ विचारियां बिनां कै औ गेलो
किसै गांव जावै ?

1. बड़ी मुश्किल से 2. जायजा लेकर 3. चंचलता।

हमें चीरोजें है:उणरो वेड़ौ[1]
दो नखतां रै तणाव री तांण सूं
चांद छेटी खावै
ज्यूं आंख्यां रा तारा
वडा होता जावै
नीचै जोवै तौ
सोर रा भाखर सिळगता लखावै ।

पैंला धीरायत[2] धरती
मोड़ा वेगा
पूंछ लेती पूत रा आंसूं
हमें तारा तमासौ देखैं ।
नैं समदर खिलका करैं ।

1. टांगो का मधि स्थल 2. धैर्यशील ।

खुसी

खिल खिल हंसतै
परभात री मींट आगे
मोदीजती[1] घास माथै
सतरंग ओस री
मुळक रौ
अेक पुळक पैमानौ
जिण नैं पीवण खातर
पवन री भीड़
आखती पड़ै ।

1. प्रसन्नता में फूली हुई ।

सोरठ

गिरनार रा गोखां री
बाजणी बीजळी
गीतां गजरायोड़ी सोरठ सांवळी
कितरी दिखणी सुपारियां री सौदागर रंग
थारी पळटवीं प्रीत री पनोती[1] चढ़ी अ`डियां
उतर उतर लागी,

सै रंग खूटां
सीचाणां[2] रंग राचणी
सै नेम तूटां
अणंत नेम राचणो
खुद मुखत्यार कांम मरजादा री मानेतण
थारै खातर
धज धूजतै रणां में ही
थूं मरवै महकती
किलोलण किलंगी ज्यूं कणकणी ।

मांणस नेह वीणा रै
सातूं सुरां नीचै
थूं आठवें सुर ज्यूं
आज दिन तांई री प्रीत रै
सरपीलै[3] सोपै रै सिरांणै आलापै

1. जूती 2. बाजनुमा पक्षी 3. शापयुक्त ।

हे भोग रै भटकतै भाग री
आखरी भोळावण ।

थारै लागणै नैणां रै पांणी सूं
समै समंद रो रळकती रतन कणगती[1] में
रह रह नवो रळो आवै
जिण खातर
आकळ रेवै लैरां रा प्रांण
सिंधू री मरजादण काया कसमसै,
थगिया नके रतनाकर थाग
थारौड़ा मकराळा मैरांण
कुण तो थगै ।

थें तो मांयलो चिणक प्रजाळ
खीरां खंखेरी थारी देह
हमें किताक बीजरा धज[2] राख
धूणी तापवै ?

1. करधनी 2. आपा, शक्ति ।

मांगणियार सूं सुहागरात रौ गीत सुणतां

अे जूनी जमीरा जाम्भा कंठ
थूं सैंकड़ां पीढ़ियां रै ओटीजतै
जूने जांगड़ै[1] रै भीणे भाटकां सूं
उथलीजतै जोवन रंग रोस खातै
सेजां री कंवळी अवळायां में
आगे रा उथेलां वाळी
राचणी राग ढाळै,
थारै कयामचै[2] री कणकणी तांत री तंत[3]
वरी[4] री जरी रा तारां चढ़
नीत प्रीत री पेल उफांण रळी रगां में
पैरवें पैरवें
चढ़ता वासंग
वतळावै ।

---

1. गीत 2. सारंगीनुमा वाद्य 3. तत्व, सार 4. दुल्हिन की पोशाक ।

व ध्यो दीप

दीवाळी रै सैं दिन
भरी भीड़ रै बीचो बीच
काजळिया कोरां में
काजळिया दो नैण
दीप सिखा सिर
दो
थिर दीप

नेहाजळ कंवळ री सांवळी जात
इणां प्रगे ही टेक माथ
वरण वेळा में हुई सनाथ

वा मुड़गी गत सी गळी री मोड़
भंवराळी वेणी री झळक्यो छोर
लारै छूटगी चमेली री छाप
भंवर गुंजार री छे'ली माप
चानणी चमकी छिण छित्र धार
सौरम सिसकी प्रांण पैसार

दीवाळी रा निघग्या[1] दीप
तमस रात ग्रर दिन पीत
पण ग्रजे जगे इण ग्रंतरतम में

वे दो दीप
वे दो दीप।

1. बुझ गये।

अनोखलाल रौ तबला वादन

अर बोल विहूणी[1] ताल री
उर ईथर थिरकण में
थिरक थिरक नै थड़ी[2] करती
अनोखे हाथां सूं अनोखी
सिरजण

कै

सूरज नै चंदै रा, दो
कटि छिबता छबीलियां सूं
ध्वनि रा फूल उछाळती
पुररवा रै अंतपुर में
ऊतरै है
अत आतुर-उर उरवसी
सुरंगण

कै

आरजदळ[3] सांवठी सेन री
अहोअड़ ऊपड़ती अस टापां[4]
इण धर संस्कृति सोण में
साखीजै है
जीवण री जोमीली गत

---

1. बोल रहित 2. बच्चे के पैरों चलने के प्रयास की क्रिया 3. आर्य दल
4. घोड़े की पदध्वनि।

गरजणा
कै
नटराजी-निरत उमंग अगै
विन नर्तक नर्तण ज्यूं
लाखूं लास्य जगावती
उद्वेलीजै है
अरथहीण कळा में चिरंतण अरथ री
उद्वेलणा ।

गवरी रौ गावणौ

थारै कंठां सूं
ढळती श्रा राग
जांणै उसा'ळी[1] सुरंगां सूं
श्रोटै रळकीजतौ
किरणां रौ कांमणियौ उद्याळ
काचै रंग रौ
घुळ-घुळ कूंपळां में
कांपणौ,

पांगरणौ हेत रौ
पवनियै रै पांख
हेताळू हियै रौ
रसमसियै तालां माथै
रपटणौ,
तीखोड़ै तिवारै[2] रै तार सूं
फूटती फुंहार रौ
नखताळी किरणां सूं
केळीजणौ,
लखियोड़ै लौटण कबूतर रौ

---

1. उषा को   2. तीन बार उबली हुई तेज शराब।

ग्रोळखियें खोळां में
लुट लुट
लोटणो,

सघियोड़ं जुगल सारंग रौ
मींट सूं मींट नै
पोवणो,

ग्रे भंवर-लैराळो गायण !
इसड़ो रीझाऊ थारौ
काळजियै री कोर सूं
गावणो ।

आवतौ बसंत

वयर बुहारी रै झाड़ू सूं
पीळीजियै गात रा पात
उतार . .. - -
रूंख रोमा'ळो[1] नै
रळी रंगियै हाथां री
संवार,

जांणै बूढै दरसण नै
कोई नियती जुवती
फेरूं बाळपणैं में
विलमावै।

1. रोमावलि।

निजळ रौ प्यास सौ मारगू नै हिरीजै

करम केळ निकुंज में
सासतै सांच री
प्रखंड जोत
थारै उजास में
कितरा जुगां
जग पैंडो पार कियो

तिरलोकी रै लौकीक पाथेय में
आतम री मूंघो मूंगा देय
दो ससारां बीच
बांटीजतो विस्वासू प्रसाद
करम री कंथा में
त्रिवेणी री ताग
पीढ़ी दर पीढ़ी
पोयीजतो रह्यौ,
कोई मंत इण कंपा मे राळ
धापतांई पूगण खातर
धांगे नी धपियो

पण पै ला गीता री ग्यान-भाप
धनुरधर हस्यौ बांटो
उण इगत

हळधर नै राधा
सुदामा नै सतभामा
किस खूणै रैय ग्या ?
मिजल रौ ग्याच तौ मारगू नै दिरीजै
वे तौ प्रीत-विमाण सीधा ही पूगोड़ा हा ।

भरथरी री गुफा नै देखियां

नारी नितंब नै
डूंगर खोहां नै
अेक ही डोह सूं डोवणिया
डीगै डांग रा डांखिया डकरैल
थें भुगती[1] नैं मुगती री भणत
अेके अगराज सूं भणी,

राज रणवासां सूं
रोही रै रिनवासां[2] री
ओळख
पल परदौ पलटतां आई—
जठै बिरचै नीं
बिरछां सूं बेलियां
पवन सूं बिरचै[3] नीं
सौरम सहेलियां
भंवर सूं बिरचै नीं
नाळ कंवळाइयां
अनहद दुरै नी[4]
नाद अमराइयां।

इण परकत री मोटी मैफल रौ
सासतौ पतियारौ पी
थें प्रांण नीझरणी में

1. भोग 2. अरण्य 3. धोखा 4. अलग नहीं होता।

अपल अलखाई
नित रूपाळी
इमरत आभा,
जिण जसन री साख
सतक त्रिवेणी संगम
त्रिभंगी अदा सूं भरै।

मैंफिल रैं मांझी ने गया
        जुग गया
खाली ही लागै है खलक नैं खोह[1]
पण म्हनैं
पुरस नै परकत रैं पारदरसी पांणी सूं
छोळां ही छोळां
छिलतोड़ी लागै।

1. गुफा।

इणी मौरत माथै

इण चढ़तै मुहारां री
थांक कचांण माथै
सघ सघ सधै है
कळियां रा तीर
निजर सदोकै[1] छिटकै निखार
सौरम सिरजै सांस उभार
भंवर पांख भिळतां भणकार
रोमां'ळी[2] राजै सिणगार,

इणी मौरत माथै
उतावळो
सावत सिस्टी री
सिरजणहार।

---

1 संधान, निशाना 2. रोमावलि।

याद्दीजै है

साईएं सरवरियै माथै
सरसती
अेकलियै वड़लै री
लाल कूंपळ जोत री लोय[1] नैं जोवतां
यादीजै है—
कंवारां कानां री
लाजीणी कोर
रळकता केसा री
लांबीजती साख[2] सूं
साखीजै है
झोल्यां पछै झरती
मोतीड़ां री माळ,

अचांणचक निजरां सोधै है
डाळां विचै टळती
सरमीली टाळ[3]।

1. लौ 2. शाखा 3. मांग।

मूंघी मजूरण

इण मुळकती माटो री
आव आवरू नैं
आपरी कांण सूं केवटणी
श्रम-सिव जटा निझरणी
जसमल ।
थें जुग जेठी[1] सरूप सायर में
आपं रै आगोर आ
भरियौ निरमळ नीर ।
वे तिरसा सो
तिरसा ही रह्या
कांम कचोळै कोडीजणा
भू भू करता भूपति ।

जर[2] झालै नीं झिल
थारै अेक उछाळै करी
कनक सवाई
वां ओड[3] ओडियां री कमाई
हे मोतिये मन री
नैं समदिये तन री
मूंघी मजूरण ।

1. श्रेष्ठ 2. धन 3. जाति जो मिट्टी खोदने का काम करती है ।

थनै ओढावां इसी
आज हाटां नीं चूंनड़ी
कर वांधां जिसी
कमाई नीं राखडी
सतियां रै जाफै फूलरै
नागमणी ज्यूं सिरोमणी
रूप रुखाळो रै
रातीजोगां
रळवो रागणी
जागणी जसमल !

जे म्हे आज
उळट पुळटां
पिरथी री पांनड़ी[1]
तौ वरण वैणां में
अेकल रूपीजै
जनक जोतिया धोरियां री
राखड़ी री
सींगोटी[2] रळियौ
अबोटी[3] रूप ।
श्रम-सीकर सौरम नै
घर-सुता धीजो
देवणी जसमल ।

1. पृथ्वी के पर्त, इतिहास 2. बैल के सींगों का मध्यिस्थल 3. पवित्र ।

सुमताज रौ मोह्

सौ वकरां रै रगत सूं
फळै श्रेक श्रंगूर वेल
श्रा जूनी कैवत
श्रोगाळतां[1] श्रोगळतां
कितरी सुहाग रातां रा
मसोसिया गीत
श्राज ही
श्रेकण सागे
थारी कबर सूं वरकता वारै श्राया,
जोवनियै री जूनी मजबूरी मोरिया
जिसमी फूल
इतियास री बिलखती बावळ
विगताया।

रूप रूघरणी
मनसब मकळाई री सांकळां री काट
सेवट वां सांकळां नै खायगी
हजार वरसां रै इतियास री
मैछ[2] मांणीगर वीर हजारी
हमें घणी फुरसत में
नीची नाड़ कियां

---

1. जुगाली करते 2. मुगल।

इण धोंळिये भाटां देठो
धोंळो धट रातां में
रमी रमें ।

ग्ररे उण ग्रतीत रौ
इतरौ निसरड़ौ[1] धीजौ
कितरै मरियोड़ै पांणी री
गुमटाई[2] गूंग[3] नै
इण मकराणी पैंठ सूं परोटै ।

1. बेशर्म 2. बुर्ज का ग्राकार ग्रहण करने वाली 3. गूंगापन, चुप्पी ।

नामरद निसरनाई

(कृष्णा कुमारी री मौत माथै)

अतीत रा डूबता डोळां[1] नै
लैरां री डुरकी[2] रा चोभा[3] देवती
डोकर पीछोळै री पाळ
थारै पिछोकड़ै[4]
कितरी अजरायल राजनीती रा हकीमां
समै रा अबोला गरभ गाळिया ।

मेवाड़ री मरजादा रै पोतै में पळियोड़ी
वा जूनै अमल री कसूंबल कांण
काई इण दिन खातर ही
जैर वणी ही ?

वे मूंछाळा जैपर नै जोधपुर
मल्हार री मैफल री मोटी दीवाधरियां[5]
अेक रतन-जोत नै बुझावण खातर
इतरी उतावळी होय
समै रा मीर[6] री मटकती मींट आगं
नगारां धगारां
निरतीजती आई ?

---

1. आंखों के कोये 2. करुणामय गीत 3. स्पर्श, सहलाव 4. पीछे का हिस्सा
5. दीप रखने वाली सेविकाएं 6. मीरसां ।

वा तौ आपी राख
आप ही वुझगी,
उण माथै आज लग
उण हसम[1] रै हाथियां रा हाड पसीजै
पण
डुळियोड़ी[2] राजनीत में
मिनख री नामरद निसरमाई
शू कदै सरमीजै ?

1. फौज 2. बदनीत।

दीवाणी दाग

मूंता नैणसी सूं लेय
इन्दरराज सिंघी तांई री दीवाणगी रै
इन्द्राज माथै
अै उफसियोड़ी ख्यातां रा पाठा[1]
अेक अपरोखी[2] अगैज देवै ।

दीवाण री मुसायबी जांणती
हूं प्रवासी राजा रै परवार री रूखाळी करतो थको
सिरपेच रै अेक आंटै में
जनता री कमाई अंटाय
राजा री मजबूरी मांणू ।

राजा मनसब[3] री रखत रूखाळतौ रूखाळतौ
वरसो वरस अमूझी
सहस संकावां री
आकळ वाकळ मूंठ नै
मोटी मुखत्यारी रै भेलू
दीवांण माथै नांखतौ
नै हवेलियां में लूट री
हाको होजावतौ ।
रात पड़ियां कितरा ही सैण

---

1. पन्ने 2. अजनबीपन 3. मुगल पद जिसके तहत अन्य सूबो की सूबेदारी दी जाती थी ।

दुसमण रै पाळै में दोगलाई री पिछांण देता,

दूजै दिन उणी दीवांण रौ पाटवी पूत
दीवाणगी री मौ'र रौ मोरौ बण
सूरजपोळ[1] चढतौ
बाप रा वारै दिन पछै करतौ ।

ख्यातां खता खायगी
किताबां छपगी
पण राजनीतो री रांग[2] में
वो ही खात खपियां जावै
हवेली सूं ऊंठियोड़ी हाकमी बंगळां तक आवै ।

1. जोधपुर के किले का द्वार । 2. जड़ें, आधार ।

किलै काटोजलौ कड़ाव

कितरा सोमता[1] रंदिया है
इण कड़ाव री कठमठी कोरां तांई
जोधै री पच्चीस पीढ़ियां नै पोखणिया
जोधारां रा वे ही पांचू पकवान

अठै सूं लेय अलंगां[2] तांई
कितरी रसत इण में नदियां पार करी
तिरया[3] कितरा डूबता आंण
नर भखणी नरबदा री छौळां माथै
केता इतियास हुलरीजिया है
मचकता हाथियां री पीठ माथै।

अटक[4] री अटक नै पार करी हुसी
अबखी वेळा री....
इण में ही जसवंत री
विखायत[5] राणियां ?
सत री मींट साध तिरती
भालाळै दुरगै रै भालै सूं
भाग री आगूंच थगती थाग देख,

पण समै कितरौ बेकार करदै है
समै रा साथ नै
आज औ अेकलौ बैठो अरोगै
आपरौ ही काट।

---

1 माम में बाजरी डालकर बनाया गया भोज 2. दूर दराज 3. बड़े कड़ाह में बैठकर नदी पार की जाती थी 4. अटक नदी 5. दुर्दिन से ग्रसित।

अेक साख छीलांणी रैगी*

मोटी उथलपुथल बीच
उथलीजग्या गढ़पती
माथा दे मोलायोड़ी जमीन
मुग्रावजे रैं भाव जनता में जरगी
राजनीत रै चिरत चढ़िया
जनसेवी
जर सेवी वरण
ग्रांके उघड़िया[1]
पासै री पळटवीं ढाळ में
मिनखां री मरजादा वहगी,
जूनी परनाळां पड़तो पांणी
नवी नींवां में मरण लागो
तिरण लागी धौळी जाजां
ऊंधी पड़ पड़
काळौ धन कचोळणी[2] ।

उण वीच ग्रडिग ऊभो
ग्रेक खेजड़लौ
जिण पंथियां नै छींया दी

---

*मेजर ठा. भैरू'सिंह खेजड़ला रैं सुरगवास माथै ।
1. ग्रसलियत प्रकट हो गई 2. संग्रह करने की घिनोनी प्रक्रिया ।

पण आपाण[1] न दियौ
अर
जोजरै जुग-खेतर में
तन पड़ियां पछै ही
वखत बतूळा भेलणी साखां में
वा अेक साख लीलांणी रंगी।

1. स्वत्व।

नेपोलियन री मींत सूं

गोरा नरपतियां रै
नाक री तीख[1] माथै
लाखीणै ताज रा लोडाऊ
थारी अकल-तेग तुरसाई रा तिरवाळा
आज दिन
उण सायरां[2] तिरै।

राष्ट्र सहेतो अेक रास धाल
आप धाव धीजियां
थारो पग पीढी-लोभ पागड़ै पड़ियौ
अर वा हिरण हूंस
अलबानिया री ओढी[3] भोम
जाय ऊतरी।

जे दुर्ग ज्यूं
अस री आबरू राख
हाथ राखतौ हियौ
तौ
थारै जस री पीढ़ियां जोड़
समै रो कोई कारीगर जोधार[4]
इतियास रै आखरां
नीं उभरतौ।

---

1. नाक ऊंची रखने की प्रवृत्ति 2. समुद्र 3. विकट 4. योद्धा।

सिसर

सळवळता खेतां में
सिसर सिसकारै
सररावै गेहूं री बाळी
ज्यूं रूखाळै री रुंआळी
ताळी दे पून[1] दौड़ी
उपाळी–
पाळो पाळी पाळी
कण कनक सुघड़ाई ढाळी
सळवळता खेतां में
रुत निरताळी ।

1. पवन ।

फोग

मरुथळ रै धीजै नै
मोटी साख देवणिया
धुकते धोरां रा धूणीगर
हे जोग धारी फोग !
यूं तपती लुवां में
जूनै जोगी ज्यूं
जटा विखेरयां
चोड़ै तावड़ै री ताप
धोळी हाडकियां रै
ब्रम तेज में तोलै,

इण पात हींण गात रै
निरवसण पैसारै में
लुआं री निरोगपणौ
वाट[1] में पाळ
दिगंबरी नेठाव सूं
मरुधरिया मांणसां री
ऊंडी ऊमस ठाडोळै–
निरफळ नहीं
थारी आ निस्काम तपस्या ।

---

1. फूल जो ठंडी तासीर के कारण रायते में डाले जाते हैं ।

हथा थोहर

मोटै मगरै री
अणभणी जोवन-पीड़
कितरी खपत[1] सूं
खाख फाड़ नीकळी है
हथा थोहर रा हाथां मे,

ईं घण वीणती
सुघड़ सांवळी
घर धियारियां नै
घणै धाव भाव सूं बुलावै,
भालो घणों बालो
पण कांटां सूं कुण नीं डरै ?
वे जाणै—
सवासणी[2] सूं छेड़ करणिये
कोई कुचाली रा हाथ
हमें तिरसां मरता हिलै,

वांनै दया आवै नी आवै
उण पैला
कोई न कोई जूनी रळी[3] राखणी
सांईणी सरपणी री सिसकार

---

1. प्रयास 2. स्वसा, लड़की 3. उमंग, प्रेम ।

उण नै आलिंगती आछटै
ऊमस रै उकाळै छिल
दोनां री पीड़
रगत रळ
दूधिया धार झरै।
अबोली घर घीयारियां
धीरै पग घर कांनी टुळै।

हुंसियो चांद

अै तारां री अणमणी चिणकां
कवि री उसांसां नै
श्रोळखांण[1] देवै
उण रै हिये री
हुंसियो[2] चांद
अंधारै रै गळै माथै
लगोलग वार करै
जदताई कै
वो खुद पूरो
मयंक नीं वणजावै,

जन-मैरांण
जिण रै जोम नै देख देख
आपरै मांयली रतीनजतो[3] आपी उथेलै,
मूनी घाटियां नै सबद
नै
लैरां नै संगीत मिळै,
आ ही वेळा हुवै
जद वारूणी सूं
इमरत नीं ठगीजै ।

1. पहिचान 2. चन्द्राकार कुल्हाड़ा 3. रत्न सर्जन की प्रक्रिया ।

कवि कीट्स नै फेरूं पढ़ियां

काले ही म्हैं कीट्स नैं
पाछौ पढियौ
म्हनैं लागौ
कै ग्रेक पल री जिन्दगी में
लाख बरस जिया जासकै है
ग्रर लाख बरसां रौ इतियास
ग्रेक पल रौ इतियास है

पण इण पल रौ खिवण[1]
लाख बरस लग तपियोड़ै
लोही री कांठळ हेटै
कदै कदास ही
मावठी[2] मीट टिमकारै ।

1. विजली सी चमक 2. माह महीने की वर्षा ।

वियतनाम री वसियत

ग्राखी दुनियां रै
सलूणै इतियास रा पानां
म्हे फेरूं पळटिया
तो थारै ग्रालै पांनै में ही
थारी वसियत
सगळां सूं लूंठी लागी ।

रंग है
वां जूंझारां रै लोही रै रंग नै
जिको ग्राबरू वाळो
ग्राजाद पीढ़ियां री रगां में
ग्राज ही रळ्यौ,
जिण सूं थारै कै
मौत री सेज सरदार सूं तूटग्यौ ।

वेलि रौ फाल फुरलियां

हे प्रवीण पीथल
चारण कवि वंस नै
सगळा सामंतां सिरै
लूंठी रीझ देवणिया
श्राखरां श्रोप रा रिझवार
थारी वेल
डिंगळ री केळ श्रोळ
वधतां वधी सो वधी ।

सुरसत रै श्रांगण में
वैणां रो सरसतो सगाई[1]
समैं नै सुवावती श्रवखाई
करी सो करी ।

जद उण भरवीं भासा री
कसणां री बंद
थां वांध्यां ही
वंधोजणो थो
सो थें घणी
सुघड़ वंधेज री सुघड़ाई वांध्यी.

1. वैण सगाई श्रलंकार ।

थारी कसमसी कूंत-गुमेज री कांण
रींत बांण फूलीजती
वेल-कवांण
किसन रूक्मणि देख देख
हंसता रह्या
वा हौळी हंसी
म्हारे कांन/आज इणी पुळ पड़ी ।

सिद्धेसर प्रसाद

मनु सूं इतरौ छोटौ
मनु रौ बाप
मनु नै नीलम घाटियां में
फूलां रै पोतड़ियां लडावै

लाज रौ घणौ लांबौ घूंघटौ
काढती सरधा
थारी सोसनिया सेज रै छेडै
अध वैठी
काम नै कामणी री रूपक रिमझोळ सूं
चढ़तै रगत में
दरसणिया[1] रूंआं[2] री
रोमांच रूचावै
उसांस री पंखी सूं
स्वेद नै सुखावै ।

वासना वळ खावतौ
सौताळू मन
घड़ी घड़ी
ईड़ा री अलक नै
आंख आगै लावै
कोरै कांम जायौ,पूत
जुग जांण सूं परवारौ खेलावै ।

---

1. दर्शनमय, दार्शनिक 2. रोम ।

आज तांई
उण सरधा भांमणी री नुंई आस
ईड़ा री दाई
थारैं मून इतबार सूं टटोळै

पण थें तौ
उण कैलासी[1] दाई नै
सूनै अंतर री फूंवौ दे
जबरी पटाई रै
घणै घाटा री कासी रा वासी
सिद्धेसर प्रसाद !

1. कैलाश की।

रगत नै सासतौ रंग भावै

(कीर्ति स्तंभ)

जूनै जस रा
सेवरा संवारती
पौढ़णी पीढियां,
चौरासी जूण नै चौसठ जोगणियां
अवतारां रा उतारा लेती
जुगां जुगां रा जोखमिया जांम जराय
समै रा पारै री परणेतण ज्यूं
ऊंची चढ़ी नै नीची ऊतरी ।

वा रिमझोळां री रमक
पछै जातां हैळी पड़ी
पण उण थाकेलै री
निसांसां री ध्यावस
कळा री कवाणां माथै ऊतरियौ,
कितरौ अजूबौ अरथाव है
इतियास री छाती में अमूझती
मिनख रै मन री सगायां रौ ??

अेक उरधती मन री अमूझ
सुचंग अनंग रो आफळ नै मुक्त करण
अवतारी किसन री कांण में
सोळै हजार रांणियां रै रणवासां री
खिड़की खोलण आखतौ पड़ै,

पल पल मौत सूं लड़ती
सासतै सुहाग री आसग[1]
रगत रा रेला रंग में बदळै,

पीढियां नै
किती किती भांत सूं
किण किण प्रीत री पतियारी देवै ?
मिनख देखै
नै अचभो करै
क्यूं कै रमणिया तौ रमग्या
पण वो ही रंग कुराव री कोर कोर
आज रमै ।

आज इतरो ऊंचौ कुण चढै
नै कुण ऊतरै
आज इतरी रगत री नदियां
पार करण
कुण तिरै नै क्यूं तिरै ।

इणी खातर
कळा, सागे धरती सूं
पाछी ऊगणी चावै
पण उण जुगां रै मरम नै म्यानौ[2] देवै
वो ही नुवौ बीज वावै
क्यूं कै काळजो राखण
रगत नै सासतो रंग भावै ।

---

1. सामर्थ्य 2. अर्थवत्ता ।

किन्नौर जिले री किन्नरी

कठमठिये अंगां री
चावळ रूपाळी
कांमरा किन्नरी
थारो सावत सरीस
सेव री लड़ालूंव डाळ ज्यूं
लचकोजतौ
निरत री निरवाळी गत में झुकै
जद चरपरा युकलिप्टस रूंख
आप री लळक में
लुळ लुळ जावै ।

पगां री पैंजणी री
खणकार सुंणतां ही
घाटी रा सगळा झरणां में
उफांण आवै,
चेतै चढ़ती मन-मछळियां
थारी सपोठ पींडियां माथै
नुवों मारग घाल
अेक ही उछाळ में
नितंव अड़
उछळ जावै ।

आज दिन तांई आ
अवोट[1] उछळ कूद

---

1. अछूती ।

इण घाटी देखी नैं थे
इणी घाटी री हमजोळी देख
पाटी पाड़ी[1]

पण हमें इण घाटी सूं
सरप सड़क जुड़गी है
अै गुलाबी छाती सूं सेयोड़ा[2] सेव
सेवट सिमलै[3] री होटलां कांनी सिरकता दीसै—
जठै पाटी पाड़ण
नित नुंवो काच
सांमी आसी
अर आं मछळिया री उछाळ
पेट रै सळां में पट जासी ।

1. बालों को संवारा 2. पकाये हुये 3. [illegible]

मांझ में मूमल री धुन सुणतां

मुळकती चांनणी रा श्राकळ मोह ज्यूं
पिळू पिळू[1] अंतर[2] भरी रूप-तळाई माथै
तिरै थारी प्रीत री सतरंग लैरियो
जिण में भीणी भीणी भांकै है
काजळिया नैणां री सम्मोहण जाळ
नागण वेणी री लय लहरणी में
सुरां'ळी[3] रंग रळी री रळाव
सुरत सरोवर डोव[4] डोहण नै[5]
हीजरतै[6] हिये री बारण[7] वंध श्राफळै।

1. लबालब 2. इत्र 3. स्वरों की 4. गहराई 5. आनन्द लेने को।
6. उत्कंठा में व्यग्र 7. हाथी।

थारी याद

उनमादी जोबन सूरज
ज्यूं ज्यूं ढळतौ जावै
जीवण बावड़ी रै
पावड़ियां पावड़ियां
थारी याद री सीळी[1] छांव
ऊंडी उतरती जावै,
कितरी ही पांणीदार पिणिहारयां
लैरां रै लखाव री कणगती[2] रळकाय
उण माथै ठुमकती
आढी डोढी उतरगी नै चढगी
पण
थारै ऊभै उतार आगै
वांरा भरिया घट ही
रीता लागै ।

1. ठंडी 2. करधनी ।

पाबूजी री कुरियोड़ी पड़ नै देखियां

अै सघियोड़ा ऊभा है
भुरजाळा सुभट[1]
जांणैं उतरादी कांठळ रा
काळोड़ा टूंक,
केसर घोडी काळवीं री गत रा
विच विच चमकै है
वचन सळाव
फोरण[2] चढ़ी है
कंवरी नै सोढी रै चंवरी चोर री
सोळौ तौ चढियौ है
पाबू रै पीठी पै
पावस पीठांण[3] री,

नायक[4] नडी[5] नच्चाणा
घुर घुर घुरै है
अंवर डंवरिया ढोल
करतव[7] पमंगां[8] पीठ
थिर होय थिरकी है
रावण हथे री हथोटी में
वैतोड़ी वावळ[9] इतियास री ।

---

1. वुर्ज की प्राकार वाले वीर 2. काले बादल के चारो ओर चमकने वाली रेखा
3. युद्ध 4. भील 5. नाड़ी 6. गहरे, बादल 7. कर्त्तव्य 8. घोड़े की
9. वर्षा के आगमन पर बहने वाली ठंडी हवा ।

कुंवर सेजौ

जुग री जठरानळ[1] झाळ सूं
जळतै नाग नै उवार
पायो थे प्रांणां रो प्यालो
मोटी जीया जूण नै
जीभ देय राख्यो थें
जावतो बोल रो मोल
सेस ज्युं असेस होय
धीणोड़ी धरती नै राखी जीवती
ऊमरै ऊमरै वे ही
ऊगता ग्रौसांण[2]
सिरै सिरै में वे ही
दूधिया उफांण
भरवैं भादवै भरै
आसा जिया जूण री।

---

1 जठराग्नि 2. अवसर।

कीं खबर नीं

कीं खबर नीं
इण अंतसपुर आलम री
उर-वाड़ी री बहारां सिरजणिये
झरणै रै आगम री
आ सतरंगी रंग री
तरंग
किरण में है
कै
काळजै री कळी में है ?

कीं खबर नीं

कीं खबर नीं
इण अ'तसपुर आलम री
उर-वाड़ी री वहारां सिरजणिये
झरणें रै आगम री
आ सतरंगी रंग री
तरंग
किरण में है
कै
काळजे री कळी में है ?

गांवेड़ी गुसांई

अरे गांवेड़ी गुसांई !
फेरूं अेकर तौ आ
थारोड़ैई गांव
अर
सुन्दरकांड रौ पाठ पाछौ तौ कर,
थारी रतन सीता रौ सराप
थनै देह री
नींद सूं जगाय
लंका री झाळां में झिलियौ
पण आज रा कांमेड़ी[1] कवियां नै
कांमणी री गारूड़ी गावतां डसग्यौ,

जे झाड़ौ उथलणौ नी भूलियौ हुवै
तौ थनै
राम री रजपूती री सौगन
अेकर
इण जूनी भागीरथी रै भाग री ही सही
उथलनै तौ देख—

कनक कांमण रै
विलळै विलाप में
सगळौ जुग गेळीजग्यौ[2]
कोई भरत री मुरछा भागियां ही
इण जुध रौ निरणौ निकळसी ।

---

1. काम में डूबे हुए   2. बेहोश हो गया, आपा खो बैठा ।

आज दिन तांई री जोड़ायतां[3] में
ओळखांण काढै
स्वयंवर नहीं सही
प्रण री जोड़ नै
खासे धीजै सूं चंवरी चाढै,
पण हमें औ धीजौ
सोन-म्रग फाल सूं
फेटीजतौ लागै ।

1. सह-धर्मणी ।

गांवेड़ी गुसांई

अरे गांवेड़ी गुसांई !
फेरूं अेकर तौ आ
थारोड़ई गांव
अर
सुन्दरकांड रौ पाठ पाछौ तौ कर,
थारी रतन सीता रौ सराप
थनै देह री
नींद सूं जगाय
लंका री झाळां में झिलियौ
पण आज रा कांमेड़ी[1] कवियां नै
कांमणी री गारूड़ी गावतां डसग्यौ,

जे झाड़ौ उथलणौ नीं भूलियौ हुवै
तौ थनै
रांम री रजपूती री सौगन
अेकर
इण जूनी भागीरथी रै भाग री हो सही
उथलनै तौ देख—

कनक कांमण रै
विलळै विलाप में
सगळौ जुग गेळीजग्यौ[2]
कोई भरत री मुरछा भागियां ही
इण जुध री निरणौ निकळसी ।

---

1. काम में डूबे हुए 2. बेहोश हो गया, भाषा खो बैठा ।

देवदासी

भारत रै भरवैं इतियास री
ऊँची पाज रै अधवीच
धरम धीठाई री मोथ[1] हेटं
तड़ित तरेड़ ज्यूं तिल तिल कळपती
कांमणिये सुरमे री रिसती रेख !
पीढी रै पुरसाथ हीण स्वारथ री
निसरमी सरम ज्यूं
थूं किसे परवस परभात री
देव वंदना में
इण अखाड़ै[2] ऊतरी
हे देवदासी
देवगना ?

कायर भूपाळां री
रिण खांतीली खड़ग रौ पांणी
उतर आयौ/अवळा अंग अपांग रै
विलमीजतै चौपार
भाग भरोसे जीवणौ समाज
धरम मठां री माठ[3] लेवण
अर्चना ओळावै
अरपायौ कंवारी कन्या रै भूख रौ
आदण ज्युं ऊफणतौ अरघाव—

1. एक प्रकार की घास 2. नृत्य स्थल, नर्तकों का समूह 3. ओट।

आ निजोरी लवंग लता
पासाण पति नै परणाय
दिव्य दायजै देह री
निरत साधना सूंपी ।

इण काम कनक केळीजती निरत आराधना री
नूपर पुकार सुण
थिर थांभै कुरियोड़ी
पासांण-पूतळियां री प्रीत हो
जीवतै प्रीतम हेत पागरै,
तौ मनसिज सेजां रै उफांण
थारै कटाछ री कळाई झेल
कुण दरसी नी परसी
आ काम मोक्षदा किंकणी ?
पछैई थारै रोम रोमांच सूं
झड़तो फूलां रो फुलझड़ियां
कांईं देव नै
सौरम सूंपण नै ही झरै ?

तन जन-जोवन नै
मन मूरत मोवण नै
ओकै अंग दो अराधना
अेक प्रांण दो प्रणय री
आ परतख विडंवना,
दारूण कांठळ घुळियोड़ी
कायर कांम कळप री
जांणतां थकां ही
अजांण पहेली वणै ।

हे मजबूर मां रीहा री हरणाखी !
थूं कितरा दिन करमहीण समाज री
कांम धोठाई माथै
पाछल परदो राखसी
कद कोई नटराज
दरसण[1] री देह सूं
ग्रौ तावीज उतारसी ?

1. दर्शन ।

बाधौ विणज

आम आदमी खातर
हर छिण आप तांई सिकरावणौ
जीवण विणज है
वो आपरो ही उघेड़ नै सींवै

हर ओसर नै आपरै मारफत
दूजां तांई सिकरावणौ
वधतौ विणज है
जिको जुग-जांमी ही जीवै

पण कवि पूरै जीवण नै
पूरण खातर सिकरावै, ओ
वाधौ विणज है
आखरां री अमरता ही पीवै ।

'सांझ' री संपूरणता

पढणिया आपरी अपणास सूं पढै
पढावणिया पढाणै रै ढाळै सूं पढावै—
वे काळिदास अर प्रसाद रै
प्रभाव रौ चमत्कार बताय
चार अंक वधता लेवण रौ
चेतौ पण देवै
            पण म्हारौ हियौ
            उण दिन हरखियौ
जद म्हें म्हारै हेताळ जूनै संपाठी सूं
सुणी
"अेक अदनो पड़चूनी वौपारी
सेरगढ़ रा धोरां धोरां ढांणी ढांणी
पड़ाव नांखतौ
चून साटै पड़चून वेचण
वरस में दो वार आवै,

सांझ रा ब्याळू कर
आसूदी आसंग सूं
ओगाळतै[1] ऊंठ कनै
धोरं रै फरै[2]
मंगायोड़ौ मांचौ ढाळ
टिमकती लालटेण जोय

1. जुगाली करते 2. ढलाव।

'सांझ' री पोथी काढ़
उण रा छंद गुणगुणावतौ
नींद री नणदळ री
चुतराई बखांणै,

ढांणी वाळा हथाई हेतू
उण नै पूछै—
सेठां इण पोथी में एकमना
अ'ड़ौ कांई' पढ़ौ ?
वो केवै—
"म्हारौ गांव अठा सूं
तीस कोस अळगौ
पण आ पोथी देखतांई'
म्हे म्हारै गांव गुवाड़
पूगता हुवां
पेट खातर
पेंडै रा उथड़का खावां
खेळी खेळी ऊठ पावां
ओरण ओरण अलख जगावां
पण नींद
घर आंगणै में लेवां
आ सोचतां थकां—
कै
आगली सूरज कठै ऊगसी ?"

आजादी-रौ मोल ही आलम री नींव है

(बंगला देस री ग्राजादी)

ग्रेक हाथ दूजे हाथ मायँ जोवै
ग्रेक भोड़ी दूजे री कमाई मायँ
कसूंबो पीवँ
ग्रौ इण खंड रौ
दोय जुगां जूनो इतियासू जाज
बंगाल री खाड़ी खनै
उथलोजग्यो,
ग्राखर[1] ग्रेक पतवार पांण
समता री समंद किती दूर
पार होतौ !

ग्रापरै ही रंग-रगत न्हाई
खाड़ी में
ग्राज सागे जात री नवी पात री वो जिहाज
ऊठती उमंग रा
पाल-पंख खोलै
जिण मायँ सूरज री नवी किरण-कूंची
गावता पंछियां री गुमेज कोरै।

पण ग्रो गांवतरौ घणौ लांबौ है
ग्रजे ग्रडिग

---

[1] ग्राखिर।

आकास-दीप री जोत आप आपै दीपणी है
अर लाजमी है खेवटियां नै मिंजल रो मोद
क्यूं कै धरती रौ किनारौ ही
समदर री सीव है
आजादी रो मोल हो
आलम[1] री नींव है।

1. ससार।

म्रजीव री मौत माथै

उण उकळतै रगत री
नेठाव[1] उमंग रौ
अकासदीप
हाल दीपियौ ही कोनी
अर वो जिहाज हालतां पांण
फेरू' उथलीजग्यौ
क्यूं'कै
दोगलां सूं' आ दुनियां खाली कोनी ।

इण दुनियां रै चिरताळै इतियास री
अे'क असलियत
हरामखोरी री खाद में ऊगोड़ी है
हर ख्यात में दोगलाई री
लांबो दाखलौ है
इणी खातर औ जिहाज
हर वार उथलीजै,

घणी दोरी ऊगै
मिनख री खुसियां
करमां रा खेतां में
पण भरियै भादवै औ दोगलो ›ठाव
अड़क गुवार ज्यूं'

1. धैर्य ।

वां माथै जोराजोरी चढ़ जावै
अेक पापी रै पांण
पाको फळो फूटतां ही
अड़क बीज ऊछळतो
पैदे पार हो जावै,

जिहाज फेरूं उळटै
जद वाही
मजूर जनता मर-पच
जूना जखम भूल
जवांमरदाई री टग[1] दे
ज्यूं त्यूं उणनै वैठो करै,
इतरै में वो ही बीज
फेरूं ऊगै
खुसियां रै खेत री फेरूं
वा ही गत हुवै,
इणी खातर घर आकास अेक कियां हो
आ दुनियां जठै ही
उठै री उठै है।

अे जुग जोखमिया मुजीव!
उण रात रै गमगीन सरणाटै में
थारी चौड़ी छाती लागती गोळियां
सगळै संसार घणै मातम सूं सुंणी
पण इतियास री उळटवी कड़ियां नै
गुणणियां ही गुणी
इणी खातर थारो दाखलो हमें
दोगलाई दुनियां सूं वारै होग्यो,
थारै खातर
थारै जलमायल जोखम री
आ नूं खार ख्वाईस

1. सहारा।

सहीदी अमरता रो खिमायजो ही सही
पण थारा वे अबोध टाबर
वांरी मौत
म्हारे सूं याद नीं करीजै
वो करुण कलमो लिखण नै
कलम नी अपड़ीजै,

जीभ सूं अेक ही जजबात
घड़ी घड़ी ऊखलै[1]
"लख लख लानत है
इण नुगरै मिनख री
नागी नबावी माथै ।"

---

1. प्रकट होता है ।

रतनाकर आराधना*

महारुद्र माळा रै
रुद्राक्ष मिरिणये ज्यूं
उदध तिर
तीर आई आ
सुघड़ साधना
दूधारु धरती रै
भूरै भूधर थण[1] सी
रतन अरथावणी
रतनाकर अराधना,

इण कोख री कूंत
थाग न सकिया—
असपत महिपत गजपत
लौकिक री अलौकिक सार
सारणिया योगी यां में पैठा,
पासांणी पिंडां में प्रगटायो
अप्रगट री सरूपी प्रगटाव
अंतर री साध रो
उफणतो आधार
कळा री कसक रो
मूरत उभार।

---

* एलीफेन्टा गुफावां ने देखियां लिखी   1. स्तन।

सम्राटां रा जग डोहणिया सिंघासण
जिण मैरांण[1] जराया[2]
उण री समै सरणी सांवटणी
चंचळ पलका
इण तीर आय पाछी ततकारं
असमेधा रा सगळा अस[3]
इण आसण आयां अेक मून नेठाव री
ममता पुचकारं

फेर वांनै
लैरां री लगाम खोल
आद अणंत उदध[4] में
रमेकड़ा ज्यूं उछेरं।

इण आसण री
आस्था सुघड़ाई सांमी
तरक तीख तोलतो
जुग उद्‌बोधै
अणु सगती रो आसंण
आस्था नै तरक री दो फरलांग सायर-फेर
हठ माथै हठ कर अळेटै
अेक रो उथेलो दूजै नै पछेटै,
चांद री माटी सूं छेटी भरियां ही
आ अळगाई यूं री यूं लखावै
क्यूंकै
मिनख मिनख रे आंतरै[5] नै
आदमी यूं री यूं हुलरावै।

इण धरती री धीज माथै
आसण आसण री सेतु साध

1. समुद्र 2. उदरस्थ कर दिये 3. अश्व 4. समुद्र। 5. दूरी।

कोई लख नैं अलख लखणियौ
जुग जोगी
दोनूं सिखरां नैं अेकण साध साधै
तौ नवजीवण में मुगती
नैं मुगती में जीवण लाधै
मिनखां रौ मारकेस
ममता में साधै
ग्यांन रौ गुमांन
समता में वाधै।

इंकलाब अधूरौ है

घटनावां घट नै रै जावै
याद घटती ही जावै
पेट रा गळेटा
दाट देवै—
संस्कृति री सीरां नै,
नुगरापौ निवेड़ लेवै
मिनखाऊ कूंत रा लाटा
दौलत री होड में
मिनख हिड़कियौ हो जावै
आपरी लाळ दूजां नै लगावै
पेट रौ परकोटौ वधतौ ही जावै,

नर भूलै घर
नै पीढी रै प्रांण री जोत
दोगली दीठ दिवाळै भिळ आव—
मिनख मिनख नै
कौम कौम नै
देखती निजरां
अजनबी लखावै

मांयली पूंजी मांहे कजळावै
आपरी खेह में
आप गम जावै,

खेह नै खंखेरियां ही
पुरस सैंपूरो है
आपै री अंवेर विना
इंकळाव अधूरो है।